



कोको बीन निकालने का यांत्रिक तरीका *

डॉ पी माधवी लता व के कृष्णप्रसाद

ऑंध्रप्रदेश में 24,156 हेक्टर क्षेत्र में कोको उत्पन्न किया जाता है। कोको, नारियल का लाभकारी अंतराल सस्य है और इसलिए पिछले 10 साल से इसका क्षेत्र विस्तार होता रहा है। ऑंध्रप्रदेश में इसकी उत्पादकता वर्ष 2009-10 में 192 किलो प्रति हेक्टर थी जो बढ़कर वर्ष 2016-17 में 550 किलो प्रति हेक्टर हो गई। यद्यपि क्षेत्र और उत्पाद में वृद्धि हुई है फिर भी मज़दूरों की कमी है। ऑंध्रप्रदेश में कोको का मुख्य फसलन काल मार्च-मई है। फसलन का 70 प्रतिशत इन्ही तीन महीनों में होता है। इस काल में 7-8 दिवस के अंतराल में फसलन होता है। इस वक्त मज़दूरों की कमी के साथ-साथ हाथ से करने से उत्पादन खर्चा भी ज्यादा रहता है जबकि यह मशीनीकृत करने से खर्चा भी कम रहता और काम भी आसान रहता है। कृषि क्षेत्र में विभिन्न फसलों के लिए मशीनें तो विकसित की है लेकिन उनका ठीक उपयोग नहीं किया जाता।

कोको फली उत्पादन

ऑंध्रप्रदेश में सिंचित स्थिति में कोको का उत्पादन होता है और इसलिए वर्ष-भर पुष्पन होता है।

भारत के अन्य कोको उत्पादक राज्यों की अपेक्षा ऑंध्र में कोको की उच्च उत्पादकता होती है। प्रत्येक पेड़ प्रति वर्ष 40 से 100 फली तक उत्पन्न करता है। फलियों का 70 प्रतिशत फसलन मार्च-मई में होता है। इस काल में 8 दिवस के अंतराल में 12-14 फसलन किया जाता है, 20 प्रतिशत फसलन जनवरी, फरवरी और जून में होता है और 10% गैर मौसमी। उच्च मौसम में प्रत्येक फसलन, 400 से 450 फली प्रति हेक्टर तक देता है।

हाथ से बीन निकालने की समस्याएं

कोको में सबसे ज्यादा उत्पादन मार्च, अप्रैल और मई में होता है। काजू, मक्का आदि का भी सीजन यही होने की वजह से मज़दूर की माँग बढ़ती है और इसप्रकार उत्पादन खर्चा बढ़ जाता है। यह ही नहीं कोको बीन जब हाथ से निकाला जाता है तो निकालने वाली महिलाओं का हाथ 3-5 दिवस एकसाथ काम करने पर खराब हो जाता है। अतः मशीनीकरण ही वह एकमात्र उपाय है जिससे उत्पादन खर्चा भी कम रहता है और समय पर ही संसाधन भी होता है।

* श्रीमती रश्मी आर आई, कनिष्ठ अनुवादक, काजू और कोको विकास निदेशालय द्वारा अनूदित।



सारणी 1 : ओडिशा में कोको उत्पादन खर्चा (2017-18)

क्र. सं.	ब्यौरे	यूनिट/मात्रा/एकड	यूनिट दर(रु.)/एकड	कुल (रु.)
(क)	इनपुट घटक			
1	खाद	एक ट्रैक्टर भर	3200	3200
2	उर्वरक	एक बैग यूरिया	300	300
		एक बैग एस.एस.पी	360	360
		एक बैग एम.ओ.पी	550	550
		जिंक	10 किलो	300
3	रासायन	कीट नाशक और कवक नाशक	--	2000
			क) कुल	6710

(ख) मजदूर घटक

1	काटछॉट और ढेर लगाना (२ बार/वर्ष)	पुरुष	रु.300/दिवस की दर पर 6	2700
		महिलारु	रु.150/दिवस की दर पर 6	
2	खाद और उर्वरक लगाना	पुरुष	रु.300/दिवस की दर पर 1	1050
		महिलारु	रु.150/दिवस की दर पर 5	
3	छिड़काव	पुरुष	--	500
4	फसलन और ढेरन	पुरुष	रु.300/दिवस की दर पर 5	6000
		महिलारु	रु.150/दिवस की दर पर 30	
5	फली तोड़ना और बीन निकालना	पुरुष	रु.300/दिवस की दर पर 3	2550
		महिलारु	रु.150/दिवस की दर पर 11	
6	किण्वन	महिलारु	रु.150/दिवस की दर पर 2	300
7	सुखाना	महिलारु	रु.150/दिवस की दर पर 2	300
8	सिंचाई रखरखाव			200
			(ख) कुल	13600
			(क + ख) कुल	20310



सारणी 2 : बीन निकालने का खर्चा

हाथ से : 3000 फली/दिवस (6.5 कार्य घंटे)							
ब्यौरे		मज़दूरी	रकम(रु)	सूखे बीन प्राप्ति/दिवस	सूखे बीन निकालने का खर्चा	उत्पाद/वर्ष /एकड	रकम में अंतर/वर्ष /एकड
पुरुष	1	रु.300/दिवस	रु.300			3000कि.	
महिला	3	रु.150/दिवस	रु.450			रु.8.30/कि.	
		कुल	रु.750	90कि.	रु.8.30/कि.	रु.2490	
मशीन से : 15,600 फली/दिवस (6.5 कार्य घंटे)							
महिला	2रु.	150/दिवस	रु.300			3000कि.	
	ईंधन	4.91/6.5 घंटे	रु.390			रु.1.29/कि.	
		कुल	रु.690	540कि.	रु.1.27	रु.387	रु.2103

मशीन की अपेक्षा, हाथ से बीन निकालने के लिए मज़दूर की ज़रूरत दुगुने है। मशीन से न्यूनतम 42 फली/मिनट और अधिकतम 100 फली/मिनट से बीन निकाला जा सकता है। एक दिवस (6.5 कार्य घंटे) में 3 महिलाएं और एक पुरुष 3000 फली से 90 किलो सूखा बीन निकाल

सकते हैं जबकि मशीन से केवल 2 महिलाएं 15600 फलियों से 540 किलो सूखा बीन निकाल सकती हैं। फील्ड स्तर पर एक किलो सूखा बीन हाथ से निकालने का खर्चा रु.8.30 है और मशीन से, रु.1.27। एक मशीन से 100-120 एकड में काम हो सकता है।

